श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com


श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.


श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.


श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.


श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

सितम्बर - चतुर्थ, अंक - 28 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address
Here

शिव संदेश

अश्रद्धा सबसे बड़ा पाप है

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.



श्रद्धाशील व्यक्ति पापों से मुक्त हो जाता है। उसके जीवन का अंधकार विलीन हो जाता है। वह यथारूप देखता है। वह जो है, जैसा है उसे उसी रूप में देखता है। वह जैसे को तैसा नहीं देखता है। इसके विपरीत अश्रद्धाशील व्यक्ति उलटा देखता है। वह जैसे को तैसा देखता है। वह अंधकार को प्रकाश और प्रकाश को अंधकार के रूप में देखता है। वह सत्य को असत्य और असत्य को सत्य मानता है। इसलिए श्रद्धा को पाप प्रमोचिनी और अश्रद्धा को परम पाप कहा गया है।

श्रद्धा के लिए भगवान महावीर ने जिस पारिभाषिक शब्द का सर्वाधिक उपयोग किया है वह है सम्यग्दर्शन। श्रद्धा और सम्यग्दर्शन जैन दृष्टि से पर्यायवाची शब्द हैं। सम्यग्दर्शन का अर्थ है सम्यक् रूप से देखना। जो जैसा है उसे उसी रूप में देखना सम्यग्दर्शन है। श्रद्धा का भी यही अर्थ है। सत्य के प्रति अखण्ड आस्था है श्रद्धा। तत्त्वार्थ सूत्र में उल्लेख है - तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनं।

तत्त्व और अर्थ के प्रति जो श्रद्धा है वह सम्यग्दर्शन है। देव, गुरु और धर्म के प्रति अनन्य आस्था श्रद्धा है, सम्यग्दर्शन है। कुगुरु, कुदेव और कुधर्म के प्रति उदासीन भाव रखना ही सम्यश्रद्धा/सम्यग्दर्शन है।

सम्यक् का अर्थ है सत्य और श्रद्धा का अर्थ है विश्वास। तो सम्यक् श्रद्धा का अर्थ हुआ सत्य विश्वास। यही अर्थ सम्यक् दर्शन का भी है। दर्शन का अर्थ है देखना। सत्य से पूर्ण दृष्टि सम्यग्दर्शन है। जब आप सत्य के विश्वासी हो जाएंगे, आपका दृष्टिकोण सत्य से संपन्न हो जाएगा तो आपके सारे दुख, सारी चिंताएं और सारे विषाद विलीन हो जाएंगे।

अक्सर आप शिकायत करते हैं कि हम धर्मध्यान करते हैं, सामायिक, पौषध और उपवास करते हैं फिर भी दुखी हैं। फिर भी अभाव में जी रहे हैं। आपकी ये शिकायतें समुचित नहीं हैं। आपके भीतर सम्यगदर्शन का पुष्प विकसित नहीं हुआ है इसीलिए आप शिकायत करते हैं। जब आपकी दृष्टि में सत्य उतर आएगा तब आप स्वतः विश्वस्त बन जाएंगे कि जो आपको मिल रहा है वह आपका ही बोया हुआ है। धर्म आपके बोए को मिटा नहीं सकता है परंतु उसे भोगने की आपको सामर्थ्य देता है।

एक दिन एक बहन मेरे पास आई। बोली- महाराज! मेरे भाई की पांच बेटियां हैं। अभी एक बेटी और हो गई। छह बेटियां हो गईं। हम इतना धर्मध्यान करते हैं। सामायिक करते हैं। पौषध करते हैं। धर्म प्रभावना में भाग लेते हैं। फिर भी इतनी बेटियां हो गईं। बेटा एक भी नहीं हुआ। हमारा सारा धर्मध्यान व्यर्थ ही चला गया।

मैंने कहा- बहन! आपको जो मिल रहा है वह आपका ही बोया हुआ है। जिन-जिन संयोगों का सृजन आपने किया है वही संयोग स्वरूप धारण कर रहे हैं। इस बात पर विश्वास रखो कि इस जगत और जीवन में अकस्मात् कुछ भी नहीं घटता है। सब कुछ क्रमिक घटता है। मनुष्य को जो प्राप्त होता है वह उसी का सृजित है। वह अपने ही सृजित संसार में रहता है। तुम धर्मध्यान करती हो, तुम्हारा परिवार धर्मध्यान में रुचिशील है यह श्रेष्ठ है। पर धर्म इसलिए मत करो कि तुम्हें पुत्र मिले, मान प्रतिष्ठा, समृद्धि और सम्पत्ति मिले। धर्मध्यान का एकमात्र लक्ष्य आत्मकल्याण है।



आस्था के साथ जागरूकता भी आवश्यक

अध्यक्षीय

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय समाजबंधुओं,

जैन धर्म हमें केवल श्रद्धा करना नहीं सिखाता, बल्कि जागरूक होकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना भी सिखाता है। हमारी धार्मिक परंपरा हजारों वर्षों की साधना, तप, त्याग, अहिंसा और करुणा की अमूल्य विरासत है। इस विरासत को सुरक्षित रखना केवल संतों और संस्थाओं का नहीं, हम सभी का सामूहिक दायित्व है।

आज परिस्थितियाँ बदल रही हैं। हमारे प्राचीन स्थानक, उपाश्रय, धर्मशालाएँ और अन्य धार्मिक संस्थाएँ केवल भवन नहीं हैं, वे हमारी पहचान, हमारी आस्था और हमारे पूर्वजों की स्मृतियों के जीवंत प्रतीक हैं। इसलिए इनकी सुरक्षा के लिए श्रद्धा के साथ-साथ जागरूकता और व्यवस्थित प्रयास भी आवश्यक हैं।

विशेष रूप से हमारी धार्मिक संपत्तियों से संबंधित भूमि के दस्तावेज, रजिस्ट्री अथवा दानपत्र, ट्रस्ट के अभिलेख, नगरपालिका रिकॉर्ड, स्वीकृत भवन-नक्शे, निर्माण अनुमति तथा वर्तमान उपयोग से संबंधित वैधानिक स्थिति की समय-समय पर समीक्षा होनी चाहिए। पुराने दस्तावेज सुरक्षित रखने के साथ उनकी डिजिटल प्रतियाँ भी तैयार की जानी चाहिए। कहीं कोई कमी या विसंगति हो तो उसे छिपाने या टालने के बजाय योग्य विधि विशेषज्ञों और संबंधित विशेषज्ञों की सहायता से समय रहते समाधान करना चाहिए।

हमें यह समझना होगा कि आस्था स्थानक बनाती है, लेकिन दस्तावेज और सजग व्यवस्था उसे सुरक्षित रखते हैं। इसी के साथ हमें अपनी महान परंपरा के इतिहास को भी नई पीढ़ी तक पहुँचाना है। इस अंक में साध्वी उमराव कुंवर जी 'अर्चना', अहिंसा की भावना तथा वीरजी वोरा जैन और आचार्य लवजी ऋषि जी महाराज जैसे महान व्यक्तित्वों की स्मृतियाँ हमें अपने गौरवशाली अतीत से जोड़ती हैं। यह इतिहास केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि उससे प्रेरणा लेने के लिए है।

आज डिजिटल युग हमें अपनी विचारधारा और जैन दर्शन को देश-विदेश तक पहुँचाने का अभूतपूर्व अवसर दे रहा है। हमारी संस्था की डिजिटल गतिविधियों और वैश्विक पहुँच का विस्तार इस बात का प्रमाण है कि परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय संभव है।

आइए, हम संकल्प लें कि अपनी धार्मिक विरासत को केवल श्रद्धा से नमन ही नहीं करेंगे, बल्कि उसकी सुरक्षा, व्यवस्था और भविष्य के लिए भी सजग रहेंगे। अपने अतीत का सम्मान, वर्तमान के प्रति जागरूकता और भविष्य के प्रति जिम्मेदारी-यही हमारी सच्ची सेवा है। हमारी आस्था सुरक्षित रहे, हमारी विरासत सुरक्षित रहे और आने वाली पीढ़ियाँ गर्व से कह सकें कि हमें जो धरोहर मिली थी, हमने उसे और अधिक सुदृढ़ बनाकर आगे पहुँचाया। इसी भावना के साथ, जय जिनेंद्र!

दीक्षा का अधिकार या रिश्तों की अग्नि परीक्षा ?

सम्पादकीय

जैन दीक्षा की पवित्रता, माता-पिता की पीड़ा और गुरु की नैतिक जिम्मेदारी पर एक गंभीर प्रश्न !

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री



मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की इंदौर पीठ ने 7 सितंबर 2026 को 20 वर्षीय युवती की याचिका का निपटारा करते हुए कहा कि एक वयस्क नागरिक अपनी इच्छा के अनुसार धर्म का पालन करने और जीवन का निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है। युवती श्वेतांबर जैन धर्म में दीक्षा लेकर साध्वी बनना चाहती है, जबकि माता-पिता इसका विरोध कर रहे हैं। न्यायालय ने दबाव की स्थिति में पुलिस से सुरक्षा लेने का अधिकार भी स्पष्ट किया है।

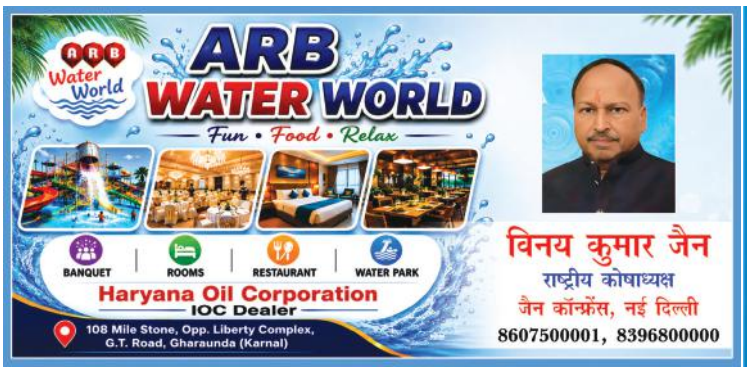
न्यायालय का निर्णय संवैधानिक अधिकारों की दृष्टि से अपनी जगह उचित है, लेकिन यह घटना जैन समाज के सामने एक अत्यंत गंभीर प्रश्न खड़ा करती है-क्या दीक्षा केवल व्यक्ति के कानूनी अधिकार का विषय है, या उससे कहीं बढ़कर आत्मसंयम, गुरु की विवेकपूर्ण परीक्षा और परिवार के प्रति करुणा की कसौटी भी है?

दीक्षा जैन धर्म में कोई भावावेषपूर्ण निर्णय नहीं। यह संसार के समस्त आकर्षणों से विरक्ति, कठोर आत्मानुशासन और आजीवन संयम का संकल्प है। इसलिए दीक्षार्थी की इच्छा का सम्मान जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है यह सुनिश्चित करना कि वह निर्णय क्षणिक प्रभाव, भावनात्मक आवेग अथवा किसी व्यक्ति-विशेष के प्रभाव का परिणाम तो नहीं।

जैन परंपरा में माता-पिता के प्रति संवेदना का स्थान अत्यंत ऊँचा है। भगवान महावीर के जीवन-प्रसंग में भी माता-पिता के प्रति कर्तव्य और करुणा का भाव दिखाई देता है। भगवती सूत्र में जमाली के प्रसंग सहित अनेक संदर्भ यह संकेत करते हैं कि प्रव्रज्या केवल व्यक्तिगत आकांक्षा नहीं, बल्कि गंभीर सामाजिक-धार्मिक उत्तरदायित्व भी रही है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि जिस संत या साध्वी के सान्निध्य में किसी युवक अथवा युवती के भीतर वैराग्य का अंकुर फूटा है, वे स्वयं उसके निर्णय के सबसे बड़े परीक्षक बनें-प्रेरक ही नहीं, विवेक के प्रहरी भी बनें। यदि माता-पिता सहमत नहीं हैं, तो संवाद हो, समाज के वरिष्ठ और बुद्धिजीवी लोग मध्यस्थता करें, समय दिया जाए। यदि वैराग्य वास्तविक है तो कुछ महीनों की प्रतीक्षा उसे कमजोर नहीं, बल्कि और अधिक प्रमाणित करेगी।

हाल के वर्षों में दीक्षा को लेकर पारिवारिक विवादों का न्यायालयों तक पहुँचना जैन समाज के लिए सहज गर्व का विषय नहीं हो सकता। कानून वयस्क को अधिकार देता है, लेकिन जैन धर्म केवल अधिकार की बात नहीं करता-वह अधिकार के साथ अहिंसा, करुणा, संयम और संबंधों के प्रति उत्तरदायित्व भी सिखाता है। (शेष पृष्ठ 5 में)





श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद
युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.
उपाध्याय मण्डल
परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'
प्रवर्तक मण्डल
परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.
मंत्री मण्डल
परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)
सलाहकार मण्डल
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री रममुनिजी म.सा. 'निर्भय'
प्रवर्तिनी मण्डल
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल
चेयरमैन : श्री विजय जैन - पानीपत
वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन - मुंबई
समन्वयक : श्री जसवंत जैन - दिल्ली
सदस्यगण : डॉ. अमित राय जैन - बड़ौत, डॉ. अनामिका तलेसरा जैन - सूरत, श्री आनंदमल छल्लानी जैन - चेन्नई, श्री अंकुर जैन - दिल्ली, श्री अशोक रांका जैन - बेंगलुरु, श्री अतुल जैन - दिल्ली, श्री अविनाश चोरड़िया जैन - नई दिल्ली, श्री जे. डी. जैन - गाजियाबाद, श्री जयंती कुकड़ा जैन - सूरत, श्री कांति कुमार लोढ़ा जैन - औरंगाबाद, श्री कंवरलाल सूर्या जैन - भीलवाड़ा, श्री महावीर रांका जैन - चेन्नई, श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - दिल्ली, श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन - पाली, पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन - इंदौर, श्री पारस मोदी जैन - मुंबई, श्री प्रशांत जैन - दिल्ली, श्री रमेश भंडारी जैन - इंदौर, श्री रविन्द्रनाथ जैन - दिल्ली, श्री संजीव हीरालाल जैन - लुधियाना, श्रीमती संतोष जैन - दिल्ली, श्री शशिकांत पिंटू कर्नावट जैन - मालेगांव, श्री सुदर्शन जैन - दिल्ली, श्री विलास राठौर जैन - पुणे, श्री विनय जैन - पानीपत, श्री विनोद कीमती - हैदराबाद, श्री विपुल जैन - दिल्ली

श्रमण संघ उदार संघ

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.



प्राचीन जैन धर्म की गुणपूजक परंपरा का निर्वहण स्थानकवासी समुदाय के द्वारा समीचीन रीति से प्रचलित है। स्थानकवासी परंपरा अनेक धाराओं में आगे बढ़ती रही। लोकाशाह द्वारा धर्मसंस्था में नवजागरण का शंखनाद हुआ। अनेक आत्मार्थी मुनियों ने यति परम्परा को छोड नये व्यवस्थाओं को प्रारम्भ कराया। जिसे क्रियोद्धार के रूप में जाना गया। इस क्रियोद्धार के कार्य में अग्रणी महामनीषी संतो की शिष्य परंपरा अनेक शाखा प्रशाखा के रूप में विस्तृत बनी। आज प्रायः सम्पूर्ण देश में स्थानकवासी परम्परा के चतुर्विध संघ की उपस्थिति देखी जा सकती है। अस्तु स्थानकवासी परम्परा भिन्न-भिन्न गुरू आम्नाय तथा भिन्न-2 क्षेत्रों में विशेष प्रभाव को देखा जाता है, प्राप्त होता है। ऐसी स्थिति में श्रावक वर्ग से एकरूपता की एक मांग उभरी कि भिन्न आम्नाय और प्रभाव क्षेत्र के कारण श्रावक वर्ग में पारस्परिक कटुताए तथा धर्मक्रिया संबंधित असमंजस उत्पन्न हो रहा था। अनेक स्थानों पर मतभेद विवाद-झगडा संघर्ष तक पहुँचता था। परस्पर विचारों का आदान-प्रदान हो तो यह स्थिति काफी परिवर्तित हो सकती है। श्रावकों का परिश्रम रंग लाया, तत्कालीन प्रमुख मुनिराजों ने भावनाओं का समादर किया। राजस्थान की धरा संगठन के लिये मध्यवर्ती बनी। उत्तर भारत से लेकर मालवा, महाराष्ट्र, गुजरात आदि स्थानों से प्रमुख संतो के चरण राजस्थान की ओर बढ़े। अजमेर, ब्यावर, सादडी क्षेत्रों के संत-मिलन ने स्थानकवासी परम्परा में एक इतिहास का निर्माण किया।

इस्वी सन् 1933, 1949 की भूमिका से 1952 में संगठन का विशाल, उदाता भव्य स्वरूप उभरकर आया। श्रमण संघ का गठन हुआ। श्रमण संघ एकता के महारथी प्रमुख संत-सतीवृंद का विशेष उपकार समस्त स्थानकवासी समाज के प्रति रहा।

इस एकता के फलस्वरूप स्थानकवासी परंपरा का समग्रविकास हुआ। संत एवं समाज के बीच की प्रान्तीय दूरियां बहुत कम हुईं। पारस्परिक सामंजस्य सौहार्द, सद्भावनाओं में गुणात्मक अभिवृद्धि हुई। उत्तर से दक्षिण तक संत-सतीवृंद की निर्बाध सातापूर्वक विहारयात्रा होने लगी। देशभर में श्रमण संघ के श्रावकों की एक श्रृंखला का निर्माण हुआ। अनेक स्थानों पर धार्मिक सामाजिक, सेवाभावी गतिविधियों में पूरे देश से सहभागिता प्राप्त होने लगी। सामाजिक विकास के नये आयाम स्थानकवासी समाज छूने लगा।

श्रमण संघ के गठन के पश्चात हमारा समाज अत्यंत सौभाग्यशाली रहा कि सभी प्रमुख संतो का पारस्परिक आत्मीयभाव वृद्धिंगत ही हुआ। सादडी सम्मेलन पश्चात पैसे अवसर बहुत थोडे रहे जब संघ में पारस्परिक कटुताओं में अभिवृद्धि हुई हो। जो क्वचित अवसर आये, उनमें भी बहुत गंभीरता का परिचय दिया गया।

श्रमण संघ के अनुयायियों के दिल की विशालता को सभी जैन सम्प्रदायें अनुभव करती है। श्रमण संघ के प्रायः सभी संत-सती अन्य सम्प्रदायों के संत-सतीजी से सम्मानपूर्वक मुलाकत संवाद करने को तत्पर रहते हैं। यह बात अन्य संघो में बहुत कम देखने को मिलती है। श्रमण संघ के संत-सतीजी सभी श्रावक-श्राविकाओं से आत्मीयता से मिलते हैं उनमें मेरे तेरेपन का भाव प्रायः नहीं देखा जाता चाहे जिस सम्प्रदाय से हो, महावीर के अनुयायी के रूप में वे प्रत्येक दर्शनार्थी का सम्मान करते हैं। श्रमण संघ के श्रावकों-श्राविकाओं का तो कहना ही क्या? वे तो वास्तव में भगवान के वचनानुसार अम्मा-पियरो की भूमिका निभाते हैं। समग्र देश में चाहे जिस सम्प्रदाय परम्परा के जैन साधु हो उनकी तहेदिल से भक्ति करने के लिये ये श्रावक-श्राविका तत्पर रहते हैं। इसका मुख्य कारण यही है हमारे गुरुओं की सशिक्षा और हमारे पूर्वजों की विशालता, असंकुचितता।

लेकिन आज हमें पुनः अपने आपको अवलोकन करना होगा। हमारे संत-सतीवृंद की सहृदयता को शिथिलता और अनुयायी वर्ग की उदारता को अज्ञान समझ कहा जा रहा है। एक तरफ विज्ञान सम्पूर्ण दुनिया को एक गांव में तब्दील करने को तैयार है। क्षेत्र के, समय के फासले तेजी से कम किये जा रहे हैं। दूसरी तरफ घोर साम्प्रदायिकता की सोच, संकुचितता अपना शिकंजा कसने को तत्पर है। विज्ञान दीवारें तोड़ रहा है। सम्प्रदायें दीवारें खड़ी कर रही है। भाई-भाई को एक दूसरे के प्रति विद्वेष से भरा जा रहा है। विशेष रूप से श्रमण संघ का अनुयायी वर्ग पुनः संकुचितताओं की ओर अनजाने में मुड रहा है। साम्प्रदायिक तत्वों के बहकावे में आकर अपने उपकारी गुरुओं को छोड़कर साम्प्रदायिक घेरे में उलझ रहा है। छोटे-मोटे पदों का लालच प्रलोभन देकर उन गुरुभक्तों को एक बाडे में बांधने की साजिश चल रही है। सभी को जागृत होना जरूरी है। ये निश्चित मानकर चलना होगा कि कट्टर साम्प्रदायिकताओं में किसी का भी सार्वत्रिक एवं सार्वकालिक कल्याण नहीं है। यदि हम अपने महापुरुषों द्वारा प्रदर्शित असंकीर्णता, विशालता, समर्पणता के पथ पर चलेंगे तो इसी में हमारा तथा जिनशासन का मंगल निहित है।

जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष पद्मश्री लाला नेमनाथ जैन-इन्दौर का स्वर्गवास

एक युग प्रेरक व्यक्तित्व का अवसान



इन्दौर (मध्य प्रदेश) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, पद्मश्री से सम्मानित, प्रेस्टीज उद्योग एवं शैक्षणिक समूह के संस्थापक आदरणीय लाला श्री नेमनाथ जी जैन का 23 सितम्बर 2026 को स्वर्गवास हो गया।

उनके निधन से उद्योग, शिक्षा और जैन समाज ने एक दूरदर्शी मार्गदर्शक खो दिया है। लाला नेमनाथ जी का जीवन कर्मठता, संकल्प और सेवा का प्रेरक उदाहरण था। उन्होंने उद्योग जगत में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की और शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी उपलब्धियों के साथ उनका सरल, स्नेहिल और समाज के प्रति समर्पित व्यक्तित्व सदैव स्मरण किया जाएगा। वे जिस कार्य से जुड़े, उसे दूरदृष्टि और पूरी निष्ठा के साथ आगे बढ़ाने का प्रयास किया।

उनके कार्यकाल में वर्ष 2015 का ऐतिहासिक साधु-सम्मेलन आयोजित हुआ। इसी सम्मेलन में पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. को श्रमण संघ के युवाचार्य के रूप में मनोनीत किया गया। यह जैन समाज के इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग है और लालाजी के अध्यक्षीय कार्यकाल की स्मृतियों में सदैव अंकित रहेगा। उनके कार्य, उनकी सेवा भावना और उनका अपनत्व आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देते रहेंगे। उनका जाना एक ऐसी रिक्तता छोड़ गया है जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। उनका स्नेहिल व्यक्तित्व और कार्यों से प्रेरणा देने की भावना हम सबके लिए अमूल्य धरोहर है। जैन कॉन्फ्रेंस का राष्ट्रव्यापी परिवार उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

– जैन कॉन्फ्रेंस परिवार

ALDACO
AIM HIGH
Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi
DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR
9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com
SS1008 ₹1490/-
SM-4 ₹1325/-
LP-28 ₹875/-
Al-cs-flx-112 ₹1490/-
LP-32 ₹875/-
SM-5 ₹1375/-



बत्तीस आंखों वाला अंधा

एक नगर में सुमीर नाम का एक आदमी रहता था। चार बेटों, चार बहुओं और कई पोते पोतियों के साथ। सब मिल-जुल कर रहते थे। अपने इस बड़े और खुशहाल परिवार को देख-देख कर वह फूला न समाता। बेटों-बहुओं से सम्मान प्राप्त करते हुए और बच्चों के साथ बच्चा बन कर खेलते हुए उसके दिन हँसी-खुशी से गुजर रहे थे। घर में किसी तरह की कोई कमी न थी। समय कब बीत जाता, पता भी नहीं लगता।

सुख का यह समय उस समय थोड़ा-सा कष्टकर हुआ, जब उसकी आंखों में रोग लग गया। पुत्रों ने उसकी आंखों का अच्छे से अच्छा उपचार कराया लेकिन उसकी आंखों की हालत सुधर न सकी। धीरे-धीरे हालत इतनी बिगड़ी कि वह अंधा हो गया। यह देखकर उसे बहुत दुःख हुआ कि अब वह देख नहीं सकता। उसका दुःख धीरे-धीरे उसके परिवार के कारण कुछ कम हुआ। पुत्र आज्ञाकारी थे और बहुएं सेवा-भावी। उसका यह कठिन समय भी सहजता से बीतने लगा। खूब सेवा होने लगी।

एक बार उस नगर में एक वैद्य आया। चारों ओर उसके इलाज की चर्चा होने लगी। सुमीर के पुत्रों को जब पता लगा कि वह वैद्य आंखों का अच्छा इलाज करता है तो उन्होंने सोचा कि क्यों न उस से पिताजी का इलाज कराया जाए। वे पिता के पास पहुँचे और कहने लगे - ''वह बहुत अच्छा वैद्य है पिताजी! हो सकता है कि आपकी आंखें ठीक हो जाएं।''

''तुम जानते हो मेरी कितनी आंखें हैं?'' सुमीर ने पूछा।

''हम ही क्या, ये तो सब जानते हैं। आपकी भी औरों की तरह दो आंखें हैं जो काम नहीं करतीं। इसमें कौन-सी खास बात है?'' पुत्रों ने कहा।

''यही तो खास बात है बेटा कि मेरी दो आंखें नहीं हैं। मेरे चार पुत्र हैं। उनकी दो-दो आंखें मिलाकर हुई आठ। चार मेरी बहुएं हैं। आठ आंखें उनकी। आठ मेरे पोते-पोतियां हैं। सोलह आंखें उनकी हो गईं। सब जोड़ोगे तो पता लगेगा कि मेरी बत्तीस आंखें हैं, जिनसे मैं सब कुछ देखता हूँ। भला मुझे आंखों की क्या जरूरत?'' सुमीर ने प्रसन्नता से बताया।

पुत्रों ने उसे समझाने की भरपूर कोशिश की, लेकिन वह उपचार कराने को तैयार न हुआ। वैद्य जिस तरह नगर में आया था, उसी तरह चला भी गया। पुत्रों के मन की मन में ही रह गई। सुमीर का समय अपने परिवार के साथ सुख से बीतता रहा।

एक दिन हुआ ऐसा कि उनके घर को सहसा आग ने घेर लिया। हवा तेज थी। आग भड़कने लगी। पलक झपकते ही वह पूरे घर में फैल गई। लोग जमा हो गए और बाल्टियों में भर-भर के पानी फेंकने लगे पर आग का कुछ भी नहीं बिगड़ा। जैसे-तैसे घर के सभी लोग घर से बाहर भाग आए। अकेला सुमीर भीतर रह गया। बाहर आने की कोशिश तो वह तब करता जब उसे कुछ दिखाई देता। भीतर से ही वह चीखता-पुकारता - ''मैं यहाँ हूँ मेरे बच्चों! मुझे जल्दी से बाहर निकालो.... मैं जल रहा हूँ.... मैं यहाँ हूँ मेरे बेटो! अरे मुझे निकालो...।''

उसके परिवार के लोग उसकी चीखें सुनते रहे और रोते रहे। किसी बेटे की भीतर जाने की हिम्मत न हुई। मौत ने उसे आग के मुँह से ग्रस लिया। सब कुछ राख हो गया। दम तोड़ते हुए सुमीर को अपनी कही बात रह-रह कर याद आती रही- ''मेरी बत्तीस आंखें हैं... मुझे आंखों की क्या जरूरत.... मेरी बत्तीस आंखें हैं...।''

श्रमण संघीय पूज्य संत परंपरा के दुर्लभ चित्र श्रृंखला...



चित्र परिचय : सन् 1960 के दशक में श्री जैन स्थानक, रूपा मिस्त्री गली, लुधियाना (पंजाब) में जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज के शिष्य भोले बाबा श्री रतन मुनि जी महाराज, पूज्य उपाध्याय श्री फूलचंद जी महाराज 'श्रमण' के श्रीचरणों में बैठकर शास्त्र स्वाध्याय करते हुए। (संदर्भ-शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत)

भारतीय डाक टिकटों में जैन गौरव की अनुभूतियाँ श्रृंखला...

युग प्रधान आचार्य श्री जयमल जी महाराज

- खुशबू जैन





भारतीय डाक टिकटों में जैन संत-परंपरा के गौरवपूर्ण अध्यायों को राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ है। इसी क्रम में युगप्रधान आचार्य श्री जयमल जी महाराज के 300वें जन्म जयंती वर्ष के अवसर पर भारत सरकार के डाक विभाग ने उनका स्मारक डाक टिकट जारी किया।

आचार्य श्री जयमल जी महाराज का जन्म 1708 ई. में राजस्थान के मेड़ता परगने के लाम्बिया में हुआ था। सांसारिक जीवन के बीच आध्यात्मिक वैराग्य जागृत होने पर उन्होंने आचार्य बुधधर जी के सान्निध्य में संयम और साधना का मार्ग अपनाया। अपने गहन अध्ययन, प्रभावशाली प्रवचन, तप-साधना और जनजागरण के कारण वे जैन परंपरा में 'युगप्रधान', 'चर्चा चक्रवर्ती' और 'भीष्म प्रतिज्ञाधारी' जैसे विशिष्ट सम्मानसूचक संबोधनों से स्मरण किए जाते हैं। उनका देहावसान 1796 ई. में हुआ।

भारत सरकार ने 25 सितंबर 2011 को उनके सम्मान में रुपये 5 मूल्यवर्ग का बहुरंगी स्मारक डाक टिकट जारी किया। भारत सरकार के आधिकारिक स्टाम्प अभिलेख में भी 25.09.2011 को व्यक्तित्व-श्रेणी का टिकट दर्ज है। तकनीकी विवरण के अनुसार यह टिकट बहुरंगी है, जिसका मुद्रण India Security Press, Nashik द्वारा Wet Offset प्रक्रिया से किया गया। कुल 6 लाख टिकट मुद्रित हुए। टिकट, प्रथम दिवस आवरण और रद्दीकरण के डिजाइन का श्रेय नैनू गुप्ता को दिया गया है।

आचार्य जयमल जी महाराज पर जारी यह डाक टिकट केवल एक संग्रहणीय फिलाटेलिक सामग्री नहीं, बल्कि जैन संत-परंपरा के उस विराट अध्याय का राष्ट्रीय दस्तावेज है, जिसमें ज्ञान, वैराग्य, तप, आत्मानुशासन और लोकजागरण एक साथ दिखाई देते हैं। भारत सरकार द्वारा किया गया यह सम्मान जैन आध्यात्मिक विरासत को राष्ट्रीय सांस्कृतिक स्मृति में प्रतिष्ठित करने वाला महत्वपूर्ण प्रमाण है।

जैन कॉन्फ्रेंस के आजीवन सदस्यों के लिये विशेष सूचना

Scan Here

जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त आजीवन सदस्यों को सूचनार्थ निवेदन है कि आप अपना नाम, पता, फोटो, मोबाईल नंबर, ई-मेल व अन्य जानकारी दिए गए QR कोड को स्कैन करके अपडेट कर सकते हैं।

- सम्पादकीय टीम



समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com



नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस



रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा



प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे) अध्याय 34

भय की ग्रंथि-सबसे गहरी गांठ

(गहन विस्तार)

हर गांठ की जड़ में यदि गहराई से देखा जाए, तो वहाँ भय मिलता है। अहंकार भय से जन्म लेता है। कर्ताभाव भय से संचालित होता है। नियंत्रण की जिद भय से उत्पन्न होती है। इसलिए भय की ग्रंथि सबसे मूल और सबसे गहरी गांठ है।

1. भय का सूक्ष्म स्वरूप : भय हमेशा तीव्र नहीं होता। कभी वह हल्की चिंता के रूप में होता है। कभी निरंतर असुरक्षा के रूप में। कभी खो देने के डर के रूप में। कभी असफल होने की आशंका के रूप में। यह पृष्ठभूमि में चलता रहता है।

2. भय और पहचान : भय अक्सर पहचान से जुड़ा होता है। "यदि मैं असफल हुआ तो?" "यदि लोग मुझे कम समझें तो?" "यदि मेरा महत्व कम हो जाए तो?" यह पहचान खोने का भय है। जब पहचान को ही अस्तित्व मान लिया जाए, तो भय स्वाभाविक हो जाता है।

3. अस्तित्व - भय : भय का एक और गहरा स्तर है-अस्तित्व-भय। "यदि सब छिन गया तो?" "यदि मैं अकेला रह गया तो?" "यदि आधार टूट गया तो?" यह मूलाधार की असुरक्षा से जुड़ा है।

4. भय की जैविक प्रतिक्रिया : भय उठते ही शरीर सक्रिय हो जाता है-नाभि कसती है श्वास उथली होती है दिल तेज धड़कता है मांसपेशियाँ सख्त होती हैं यदि यह प्रतिक्रिया बार-बार हो, तो भय की ग्रंथि गहरी हो सकती है।

5. दमन और भय : कई लोग भय को स्वीकार नहीं करते। वे कहते हैं-"मैं नहीं डरता।" "मुझे फर्क नहीं पड़ता।" पर दमन भय को समाप्त नहीं करता। वह उसे और भीतर धकेल देता है। और भीतर दबा भय कभी न कभी तीव्र प्रतिक्रिया बनकर निकलता है।

6. भय की पहचान : भय की ग्रंथि पहचानने के लिए ईमानदारी आवश्यक है। स्वयं से पूछें-मुझे वास्तव में किस बात का डर है? क्या मैं कुछ खोने से डरता हूँ? क्या मैं छवि टूटने से डरता हूँ? इन प्रश्नों से भय सतह पर आता है।

7. भय के साथ बैठना : भय को बदलने की जल्दी न करें। बैठें। श्वास लें। नाभि को महसूस करें। भीतर कहें-"हाँ, अभी भय है।" यह स्वीकार भय की तीव्रता कम करता है।

8. भय से विश्वास तक : भय तब तक रहेगा जब तक अस्तित्व पर भरोसा न हो। भरोसा अभ्यास से आता है-श्वास से सजगता से समर्पण से जब व्यक्ति अनुभव करता है कि वह धारण किया जा रहा है, तो भय नरम पड़ता है।

9. भय और प्रमाद : जहाँ भय है, वहाँ प्रतिक्रिया तीव्र होगी। जहाँ भय है, वहाँ नियंत्रण की जिद होगी। जहाँ भय है, वहाँ प्रमाद जीवित रहेगा। भय की ग्रंथि पिघलते ही प्रतिक्रिया कम होती है।

10. अंतिम स्पष्टता : भय शत्रु नहीं है। वह सुरक्षा की पुरानी आदत है। जब उसे देखा जाता है, स्वीकार किया जाता है, और श्वास से नरम किया जाता है, तो उसकी पकड़ ढीली पड़ती है। अगले अध्याय में हम समझेंगे-अहंकार की ग्रंथि कैसे भय को ढँककर जीवित रहती है। (क्रमशः)



जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...

जैन दर्शन से प्रभावित ब्रिटिश सांसद : बॉब ब्लैकमैन

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

जैन धर्म की अहिंसा, अनेकांत और करुणा की जीवन-दृष्टि भौगोलिक सीमाओं से परे विश्व मानव को प्रभावित करती रही है। ब्रिटेन के सांसद बॉब ब्लैकमैन (Bob Blackman CBE, MP) इसका उल्लेखनीय उदाहरण हैं। जैन समुदाय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता केवल औपचारिक समर्थन तक सीमित नहीं, बल्कि ब्रिटिश संसद के भीतर जैन धर्म की पहचान और उसके मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के निरंतर प्रयासों में दिखाई देती है।

ब्रिटिश संसद के All-Party Parliamentary Group for Jainism (Jain APPG) में बॉब ब्लैकमैन ने उपाध्यक्ष के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस समूह का उद्देश्य ब्रिटेन में जैन धर्म की पहचान और समझ को बढ़ाना है। संसदीय अभिलेखों में उनके नाम के साथ उपाध्यक्ष का पद दर्ज है।

जैन समुदाय की ओर से चलाए जा रहे उस अभियान में भी उन्होंने सक्रिय सहयोग दिया, जिसका उद्देश्य ब्रिटेन की जनगणना में Jainism को पृथक धार्मिक पहचान के रूप में दर्ज कराना है। स्वयं ब्लैकमैन ने इस प्रयास को 2031 की जनगणना तक आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है।

ब्रिटिश संसद में अहिंसा दिवस जैसे आयोजनों में उनकी सक्रिय भागीदारी भी उल्लेखनीय है। ऐसे अवसरों पर वे जैन धर्म के अहिंसा-संदेश को समकालीन विश्व के लिए प्रासंगिक बताते रहे हैं। जैन समुदाय के ब्रिटेन के सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में योगदान को भी संसद में सराहा गया है।

भारतीय संस्कृति के प्रति उनके सम्मान का एक और उल्लेखनीय प्रसंग 2024 में सामने आया, जब उन्होंने ब्रिटिश संसद में शपथ लेते समय किंग जेम्स बाइबिल के साथ श्रीमद्भगवद् गीता भी हाथ में रखी। यह भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं के प्रति उनके सम्मान का सार्वजनिक उदाहरण है।

भारतीय संस्कृति और सार्वजनिक जीवन में उनके योगदान को भारत सरकार ने वर्ष 2020 में पद्मश्री से सम्मानित किया। भारत सरकार की आधिकारिक पद्म पुरस्कार सूची में उनका नाम Robert John Blackman - Public Affairs, United Kingdom के रूप में दर्ज है।

बॉब ब्लैकमैन का व्यक्तित्व इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है कि उन्होंने जैन धर्म को केवल एक समुदाय की धार्मिक परंपरा के रूप में नहीं, बल्कि अहिंसा, सह-अस्तित्व, करुणा और अनेकांत की वैश्विक जीवन-दृष्टि के रूप में समझने और उसके संदेश को व्यापक मंचों तक पहुँचाने में सहयोग दिया है। जैन समाज के लिए उनका यह जुड़ाव इस बात का प्रमाण है कि भगवान महावीर का अहिंसा-संदेश आज भी भारत की सीमाओं से निकलकर विश्व के जनप्रतिनिधियों और चिंतकों को प्रभावित कर रहा है।

संदर्भ : ब्रिटिश संसद के Jain APPG के अभिलेखय UK Parliament Hansard; Institute of Jainology;

आचार्य भगवंत डॉ. शिवमुनि जी महाराज के जन्मदिवस पर 'आत्म-ध्यान योजना' के तहत हुआ विशाल ऑनलाइन ध्यान शिविर का आयोजन

8500 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं एवं साधु-साध्वियों ने लिया हिस्सा 16 प्रांतों और 3 देशों के 123 शिविर केंद्रों से जुड़े श्रद्धालु







श्रद्धेय आचार्य भगवंत डॉ. शिवमुनि जी महाराज सा. के जन्मदिवस के पावन अवसर पर 'जैन कॉन्फ्रेंस' की 'आत्म-ध्यान योजना' द्वारा एक विशेष ऑनलाइन (Zoom App के माध्यम से) ध्यान शिविर का भव्य आयोजन किया गया। यह आयोजन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान अतुल जैन के कुशल मार्गदर्शन में तथा आत्म-ध्यान योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन के नेतृत्व में 20 सितंबर को सुबह 7:00 बजे से 9:00 बजे तक आयोजित किया गया।

इस दो घंटे के शिविर में भारत के 16 प्रांतों और विदेश (3 देशों) के कुल 123 आत्म-ध्यान केंद्रों के माध्यम से 8500 से अधिक श्रावक-श्राविकाएं तथा साधु-साध्वी भगवंत ऑनलाइन एकत्र हुए और एक साथ ध्यान साधना में भाग लिया। शिविर की शुरुआत में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन ने श्रद्धेय आचार्य भगवंत को जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं समर्पित की। उन्होंने संघपति, अध्यक्षों तथा शिविर को सफल बनाने वाले सभी कार्यकर्ताओं और सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए बधाई दी और आने वाले समय मे शिविर आयोजित करने वाले सभी संघपति अध्यक्ष का सम्मेलन करने की घोषणा की।

ध्यान एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शनः पूज्य श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री शिरीष मुनि जी महाराज ने ध्यान के आध्यात्मिक महत्व पर रोशनी डाली। ध्यान साधिका श्रीमती निशा जैन द्वारा सभी साधकों को सामूहिक ध्यान एवं आलोचना करवाइ गई, आचार्य भगवंत ने ध्यान का गहरा महत्व समझाते हुए सभी को ध्यान साधना में लीन कराया। शिविर का समापन मंगल मैत्री के माध्यम आचार्य भगवंत के मंगल पाठ से हुआ। इस आयोजन को सफल बनाने में जैन कॉन्फ्रेंस एवं आत्म-ध्यान योजना के अनेक वरिष्ठ एवं युवा पदाधिकारियों ने अमूल्य योगदान दिया। विश्वस्त मण्डल के समन्वयक श्री जसवंत जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विमल जैन एवं श्री महेन्द्र जैन तथा आत्म-ध्यान योजना के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रोहित जी छाजेड़ जैन, योजना की महिला अध्यक्षा श्रीमती लाड जी मेहता जैन, श्रीमती रीचा जैन, श्री अभिषेक दुग्गड़ जैन, श्री वर्धमान सिंघवी जैन, श्री पुष्पक ओसवाल, रविंद्र लोढ़ा जैन, दर्शना जी लुनावत जैन, श्री नीलेश कोठारी जैन, श्री विजय लोढ़ा जैन, श्री दिनेश पोखरना जैन, डॉ. अमितराय जैन, श्री विपुल जैन, श्री अमितकुमार जैन, श्रीमती संतोष जैन अनमोल सहयोग प्राप्त हुआ। यह शिविर आध्यात्मिक ऊर्जा, ध्यान साधना और आचार्यश्री के प्रति असीम भक्ति भाव का एक अभूतपूर्व संगम सिद्ध हुआ।

प्रेषक : रोहित छाजेड़ जैन



J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन


चेयरमैन अभय जैन


महामंत्री अतुल जैन


कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

संवत्सरी महापर्व पर आत्मशुद्धि और क्षमा का संदेश




रानियाँ (हरियाणा) : संयम निधि महासाध्वी श्री वृष्टि जी महाराज आदि ठाणे के सान्निध्य में मंगलवार को जैन समाज की ओर से स्थानीय जैन धर्मशाला में संवत्सरी महापर्व श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालुओं ने धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। पर्युषण पर्व के दौरान तपस्या करने वाले श्रावक-श्राविकाओं को सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले बच्चों को भी पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में श्री जगरूपलाल जैन, श्री राजकुमार जैन, श्री मुलखराज पटवारी, श्री कालूराम मेहता, श्री बहादुर जैन, श्री विनोद जैन, श्री सोमप्रकाश, श्री नरेश जैन, श्री मोहन लाल, श्री मुकेश जैन सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे। प्रेषक : श्री नरेश जैन

सत्यपाल जैन लगातार छठी बार बने भारत के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल



चंडीगढ़ : पूर्व चंडीगढ़ सांसद एवं वरिष्ठ अधिवक्ता सत्यपाल जैन को पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट, चंडीगढ़ के लिए भारत का अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (ASG) लगातार छठी बार पुनर्नियुक्त किया गया है। राष्ट्रपति की स्वीकृति से उनकी नई नियुक्ति 1 अक्टूबर से 31 दिसंबर 2026 तक रहेगी। सत्यपाल जैन वर्ष 2015 में इस पद पर नियुक्त होने वाले चंडीगढ़ के प्रथम ASG थे। वे 1996 और 1998 में चंडीगढ़ से लोकसभा सांसद भी रह चुके हैं। लगातार छठी नियुक्ति उनके लंबे विधिक अनुभव और केंद्र सरकार के महत्वपूर्ण मामलों में उनकी भूमिका को रेखांकित करती है।

जैन समाज के लिए भी यह गौरव का विषय है कि वरिष्ठ विधिवेत्ता सत्यपाल जैन को देश की न्यायिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण संवैधानिक एवं विधिक दायित्व निभाने का अवसर लगातार प्राप्त हो रहा है। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक अभिनंदन!

– जैन प्रकाश सम्पादकीय टीम

कर्नाटक राज्यपाल द्वारा जैन साध्वियों के दर्शन



इन्दौर (मध्य प्रदेश) : कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम श्री थावरचंदजी गहलोत जैन साधना भवन स्थानक गुमास्ता नगर इंदौर में पूज्य श्री रमणीक कुंवर जी 'दमु' के दर्शनार्थ पधारे। इस अवसर पर उनका अभिनंदन श्री संघ के महेश डाकोलिया जैन, राजेंद्र लोढा जैन, सुभाष विनाक्या जैन, देवेंद्र गादिया जैन, राकेश डागा जैन, मनोहरलाल जैन, सुनील कुदार, सुभाष रातड़िया, मानमल मेहता आदि ने किया।

जन्म से सरदार, कर्म से जैन



गिदडबाहा (पंजाब) : श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी महाराज आदि साधुवृंद के शुभ सान्निध्य में पर्युषण आराधना के दौरान स्थानीय निवासी सिख सरदारों के सिर पर पंजाब की शान पगड़ी, तन पर चोलपट्टा - चादर - मुँहपट्टी और संवत्सरी पर चौविहार पौषध व्रत। पहचान जन्म से नहीं, कर्म और आचरण से बनती है।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') यह भी आत्ममंथन का विषय है कि कहीं दीक्षा की पवित्र परंपरा अनजाने में शिष्य-शिष्याओं की संख्या, प्रतिष्ठा अथवा किसी गुरु-परंपरा के विस्तार का माध्यम तो नहीं बन रही? ऐसा कोई संकेत भी यदि समाज में उत्पन्न होता है तो वह साधु-साध्वी जीवन की निष्कलंक छवि के लिए अत्यंत घातक है। दीक्षा किसी शिष्य को पाने की उपलब्धि नहीं, एक आत्मा को संसार से ऊपर उठाने का दायित्व है।

इसलिए हमारा आग्रह किसी की दीक्षा रोकने का नहीं, दीक्षा को विवाद से बचाने और उसकी पवित्रता को सर्वोच्च रखने का है। माता-पिता की सहमति प्राप्त करने का हर संभव प्रयास हो, असहमति हो तो संवाद और प्रतीक्षा को स्थान मिले, और जब तक यह सुनिश्चित न हो कि निर्णय पूर्णतः स्वतंत्र, स्थिर और निर्विकार है, तब तक गुरु स्वयं भी धैर्य रखें। कानून व्यक्ति को दीक्षा का अधिकार दे सकता है, लेकिन दीक्षा को महान बनाती है-वैराग्य की निर्मलता, गुरु का निष्पक्ष विवेक और माता-पिता के हृदय को अनावश्यक पीड़ा न पहुँचाने वाली करुणा। जैन समाज को आज इसी अंतर को समझने और समझाने की आवश्यकता है। यही हमारी प्राचीन श्रमण परंपरा की गरिमा भी है और उसकी वैश्विक प्रतिष्ठा की रक्षा का मार्ग भी।

स्मृति शेष श्रद्धांजलि



महासती पू. श्री कमला जी म. का चौविहार संथारा संलेखना देवलोकगमन

फतहनगर (राजस्थान) : मेवाड़ प्रवर्तक श्री मदन मुनि जी म. एवं पूज्य गुरुणी मैया उगमकंवर जी म. की सुशिष्या महासती श्री कमला जी म. का चौविहार संथारा-संलेखना पावनधाम, फतहनगर में दिनांक 17.09.2026 को पूर्ण हो गया। प्रेषक : श्री अम्बेश गुरु मैमोरियल संस्थान, फतहनगर



श्रीमान् शांतिलाल रायसोनी जैन का आकस्मिक निधन

फलीचड़ा (राजस्थान) : फलीचडा निवासी वापी प्रवासी श्री शैलेष कुमार, मितेश कुमार के पूज्य पिताजी श्री शान्तिलाल रायसोनी जैन का आकस्मिक निधन 14 सितम्बर को आकस्मिक निधन हो गया।
प्रेषक : रायसोनी परिवार



श्री कमलेश कुमार जी लोढ़ा का देवलोक

सूरत (गुजरात) : श्री कमलेश कुमार लोढ़ा जैन (उम्र 54 वर्ष) का दिनांक 17.09.26 गुरुवार को स्वर्गवास हो गया। उनकी इच्छा के अनुसार परिवारजनों ने उनके नेत्रदान का महान कार्य संपन्न किया। प्रेषक : लोढ़ा परिवार भीम, उधना (सूरत)

भूल सुधार : जैन प्रकाश समाचार पत्र सितम्बर द्वितीय अंक में स्व. श्रीमती शांता बाई दुग्गड़ जैन के पति श्री सुगनचंद दुग्गड़ जैन के नाम के साथ त्रुटिपूर्वक स्वर्गीय शब्द अंकित हो गया है। हम श्री सुगनचंद दुग्गड़ जैन के उत्तम स्वास्थ्य की मनोकामना करते हैं एवं हृदय से क्षमा याचना करते हैं। – जैन प्रकाश सम्पादकीय टीम



श्री दीपेश छाजेड़ जैन ने की 15 उपवास की तपस्या

मुंबई (महाराष्ट्र) : युवा गौरव श्री दीपेश छाजेड़ जैन सुपुत्र श्री पारसमल छाजेड़ जैन (पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री) द्वारा 15 उपवास की तपस्या पूर्ण की गई। आपका यह तप आत्मशुद्धि, संयम और धर्मनिष्ठा की अनुपम प्रेरणा है। तपस्वी के तप की हार्दिक अनुमोदना एवं सुखसाता।





शिवाचार्य 85वें जन्मोत्सव के अवसर पर सूरत में आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ



सूरत में आयोजित जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति एवं वार्षिक साधारण सभा



शिवाचार्य भक्ति-संध्या



जैन कॉन्फ्रेंस अति विशिष्ट राष्ट्रीय सेवा सम्मान कार्यक्रम



18 सितम्बर 2026 पूज्य श्री शिवाचार्य जन्मोत्सव कार्यक्रम

जैन कॉन्फ्रेंस लाभार्थीगण एवं राष्ट्रीय अभिनंदन सम्मान कार्यक्रम




जय गुरु रूप


जय गुरु मरुधर केसरी


जय गुरु सुकन


दानवीर सेठ
स्व. श्री माणकचंद सा बोहरा


स्व. श्रीमती
रूपलताजी बोहरा

HaloVerse Entertainment Pvt. Ltd. Mumbai
Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai
XL Energy Ltd. Mumbai

नरेश-बबिता, हर्ष-संजना,
सौ.कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन
मुंबई - जोधपुर



कोटिशः वंदन नमन



नरेश बोहरा जैन
कार्याध्यक्ष : श्री मरुधर केशरी पावनधाम, जैतारण (राजस्थान)
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन, ट्रस्टी विश्वस्त मंडल, जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
Mo.: 7666540600 E-mail : jainn07@gmail.com

शिवाचार्य के 85वें प्रकाशोत्सव पर उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

जैन कॉन्फ्रेंस का राष्ट्रीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न, आचार्यश्री ने दिया आत्म-साक्षात्कार का संदेश, राष्ट्रीय सभाएं, भक्ति-संध्या, सम्मान समारोह एवं देशभर के पदाधिकारियों की सहभागिता से दो दिवसीय आयोजन बना ऐतिहासिक, युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. के दिल्ली चातुर्मास की आज्ञा

सूरत (गुजरात) : आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव, ध्यानयोगी, श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी महाराज साहब का 85वाँ प्रकाशोत्सव एवं श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का राष्ट्रीय वार्षिकोत्सव 17 एवं 18 सितम्बर 2026 को सूरत की पुण्यधरा पर श्रद्धा, भक्ति, संघीय एकता और संगठनात्मक गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। देश के विभिन्न प्रांतों से जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारी, प्रांतीय पदाधिकारी, महिला एवं युवा शाखाओं के प्रतिनिधि, विभिन्न राष्ट्रीय योजनाओं एवं समितियों के पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में श्रद्धालु इस अवसर के साक्षी बने।

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा प्रतिवर्ष आचार्य भगवन के प्रकाशोत्सव को अपने राष्ट्रीय वार्षिकोत्सव के रूप में उनके पावन सान्निध्य में मनाने की परम्परा है। इस वर्ष श्रमण संघ के अमृत महामहोत्सव वर्ष के कारण आयोजन का महत्व और भी विशिष्ट रहा।

आचार्यश्री का संदेश-संसार के सभी कार्य करते हुए आत्मा रहे केन्द्र-बिन्दु : विशाल धर्मसभा को मंगल उद्बोधन प्रदान करते हुए पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि साधु-साध्वियों की जब भी कोई आवश्यकता होती है, जैन कॉन्फ्रेंस मातृसंस्था के रूप में सदैव आगे रहती है। सम्मेलन हो अथवा संगठन का कोई कार्य, श्रावक समिति सहयोग में खड़ी रहती है और दोनों संस्थाएं अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं।

अपने 85वें प्रकाशोत्सव के संदर्भ में आचार्यश्री ने अत्यंत आत्मीय भाव से कहा कि अरिहंत परमात्मा की साधना प्राप्त होने के बाद उनकी जन्मोत्सव मनाने की इच्छा नहीं रही, किन्तु समाजजनों के आग्रह, प्रेम, श्रद्धा, तपस्या और अधिकारपूर्ण भावना का सम्मान करते हुए वे इस आयोजन में विराजमान हैं।

आचार्यश्री ने आत्म-साक्षात्कार की ओर प्रेरित करते हुए फरमाया कि मनुष्य ने अनेक यात्राएं की हैं, पर इस भव में जो महान कार्य किया जा सकता है, वह क्षायिक समकित की प्राप्ति है। इसका मार्ग आत्म-साक्षात्कार से होकर जाता है, यह अनुभूति कि "मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ।" आत्मा है तो सब कुछ है। अब तक देह को महत्व देने से जीव संसार में भटकता रहा है। जिस प्रकार चिकित्सक का ध्यान रोगी पर और परीक्षक का ध्यान परीक्षा पर रहता है, उसी प्रकार संसार के समस्त दायित्व निभाते हुए भी आत्मा हमारे जीवन का केन्द्र-बिन्दु बनी रहे।

जैन कॉन्फ्रेंस के सेवा कार्यों की अनुमोदना : पूज्य आचार्यश्री ने जैन कॉन्फ्रेंस के कार्यों की सराहना करते हुए दान, सेवा और समाजहित के कार्यों को पुण्यकारी बताया। सादड़ी राजस्थान में जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा किए जा रहे कार्यों की विशेष अनुमोदना करते हुए समाज के लिए निरंतर कार्य करते रहने की प्रेरणा प्रदान की।

वर्ष 2027 के दिल्ली चातुर्मास की आज्ञा : इस पावन अवसर पर उत्तर भारत के श्रद्धालुओं की भावनाओं को देखते हुए पूज्य आचार्यश्री ने द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव के आगारों सहित युवाचार्य प्रवर श्री महेन्द्रऋषि जी महाराज साहब आदि ठाणा का वर्ष 2027 का चातुर्मास अरिहंत नगर, दिल्ली में करने की आज्ञा प्रदान की। इस घोषणा से दिल्ली एवं उत्तर भारत से पधारे श्रद्धालुओं में विशेष हर्ष व्याप्त हुआ। प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीषमुनि जी म., सहमंत्री युवा मनीषी श्री शुभम मुनि जी म., प्रवचन प्रभाकर श्री शमित मुनि जी म., मधुर गायक श्री निशांतमुनि जी म. तथा श्री शाश्वत मुनि जी म. ने भी शिवाचार्य प्रकाशोत्सव के अवसर पर वक्तव्य एवं भजनों के माध्यम से अपनी भावनाएं अभिव्यक्त की।

17 सितम्बर को राष्ट्रीय संगठनात्मक बैठकों का क्रम : प्रकाशोत्सव के पूर्व दिवस 17 सितम्बर को जैन कॉन्फ्रेंस की महत्वपूर्ण राष्ट्रीय संगठनात्मक गतिविधियाँ आयोजित की गई। प्रातः 10 बजे राष्ट्रीय प्रबन्ध समिति सभा, दोपहर 12 बजे राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा तथा दोपहर 2 बजे राष्ट्रीय साधारण सभा आयोजित हुई। इनमें संगठन की गतिविधियों, योजनाओं एवं भावी कार्यों पर विचार-विमर्श हुआ। इसी दिन राष्ट्रीय युवा शाखा एवं राष्ट्रीय महिला शाखा की कार्यकारिणी समिति सभाएं भी आयोजित की गई। जिनका संचालन क्रमशः राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री अमित कुमार जैन, राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीप जैन द्वारा किया गया। साधु-साध्वी भगवंतों के पावन सान्निध्य ने इन बैठकों को आध्यात्मिक गरिमा प्रदान की।

भक्ति-संध्या में भजनों से सजी गुरु-आराधना : 17 सितम्बर की संध्या 'जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अभिनन्दन समारोह' एवं भव्य 'शिवाचार्य भक्ति-संध्या' के नाम रही। जिसमें "जैन कॉन्फ्रेंस अति विशिष्ट सेवा सम्मान" के अंतर्गत संगठन एवं समाज के प्रति उल्लेखनीय सेवाओं के लिए श्री सुदर्शन जैन (दिल्ली), श्री विनय जैन (पानीपत), श्री अविनाश चोरड़िया जैन (दिल्ली), श्रीमती कमला मेहता जैन (चेन्नई), श्रीमती रीचा जैन (लुधियाना), श्री अतुल चोरड़िया जैन (पुणे), श्रीमती सुरेखा कटारिया जैन (पुणे), श्री आकाश मादरेचा जैन (सूरत) एवं श्री अमितकुमार लोढ़ा जैन (औरंगाबाद) को सम्मानित किया गया। जैन भजन गायक पिंटू स्वामी ने अपनी भाव भक्तिपूर्ण प्रस्तुतियों के माध्यम से गुरु-भक्ति का वातावरण निर्मित किया। देशभर से आए पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं श्रद्धालु इस भक्तिमय आयोजन में सहभागी बने।

'शिवाचार्य आत्म-ध्यान साधना राष्ट्रीय सम्मान-2026' : प्रकाशोत्सव के मुख्य समारोह में जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा प्रतिष्ठित 'शिवाचार्य आत्म-ध्यान साधना राष्ट्रीय सम्मान-2026' मालेगांव के श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन को प्रदान किया गया। सम्मान के अंतर्गत रू 2,51,000 की सम्मान राशि प्रदान की गई। इसके साथ ही 'जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय सम्मान-2026' के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली विभूतियों का अभिनन्दन किया गया-दान के क्षेत्र में श्री अशोक रांका जैन-बैंगलोर, संगठन के क्षेत्र में श्री रवीन्द्रनाथ जैन-दिल्ली, सेवा के क्षेत्र में श्री लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन-उदयपुर, दीर्घ समाजसेवा के लिए श्री हस्तीमल मुणोत जैन-अहमदनगर, शिक्षा के क्षेत्र में श्रीमती रुचिरा सुराणा जैन-मुंबई तथा उत्कृष्ट युवा के रूप में श्री आशीष भंसाली जैन-बैंगलोर को सम्मानित किया गया।

महोत्सव के आधार स्तम्भ : इस आयोजन की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन, मुख्य लाभार्थी अल्पसंख्यक योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन श्री नरेश बोहरा जैन, ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेश आनन्द प्रकाश जैन तथा स्वागताध्यक्ष राष्ट्रीय चेयरमैन श्री विजय जैन पानीपत रहे।

राष्ट्रीय युवा शाखा के अध्यक्ष श्री विपुल जैन तथा राष्ट्रीय महिला शाखा की अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जैन सहित दोनों शाखाओं के पदाधिकारियों की भी सक्रिय सहभागिता रही। राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण, मंत्रीगण, प्रचार-प्रसार मंत्री, संगठन मंत्री, प्रांतीय महामंत्री, विभिन्न राष्ट्रीय योजनाओं अल्पसंख्यक योजना, ज्ञान प्रकाश योजना, मानव सेवा योजना, जीवदया योजना, वैय्यावच्च योजना, अल्पसंख्यक योजना, हर प्रांत जैन भवन योजना, जनकल्याण समिति, विहारधाम योजना, डाटा डिजिटाइजेशन राष्ट्रीय समिति तथा राष्ट्रीय मीडिया संचार समिति-के पदाधिकारी भी समारोह में सहभागी बने।

शिवाचार्य जन्मोत्सव राष्ट्रीय आयोजन समिति का महत्वपूर्ण योगदान : दो दिवसीय आयोजन को सफल बनाने में शिवाचार्य जन्मोत्सव राष्ट्रीय आयोजन समिति की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आयोजन समिति में मुख्य मार्गदर्शक श्री रवीन्द्रनाथ जैन, मुख्य संयोजक श्री जसवंत जैन, संयोजकगण श्री रमेश भण्डारी जैन, डॉ. अमितराय जैन, श्री विनय कुमार जैन, श्री शशिकुमार कर्नावट जैन, श्री जयन्तीलाल कूकड़ा जैन, श्री विपुल जैन, श्रीमती संतोष जैन, श्री सम्पत खाब्या जैन तथा श्री आकाश मादरेचा जैन सम्मिलित रहे।

शिवाचार्य जन्मोत्सव राष्ट्रीय सलाहकार परिषद में चेयरमैन श्री बाबूलाल रांका जैन के साथ विनय कुमार जैन, श्रीमती पुष्पा राजेन्द्र गोखरू जैन, शंभूलाल ललवानी जैन, अनामिका तलेसरा जैन, विनोद धोका जैन, मुन्नालाल जैन, सुनील चोपड़ा जैन, डॉ. अशोक पगारिया जैन, कंवरलाल सूरिया जैन, कांतिलाल चोपड़ा जैन तथा नेमीचन्द धाकड़ जैन का सहयोग रहा।

आवास व्यवस्था में श्री अमित मेहता जैन पण्डाल-मण्डप व्यवस्था में श्री विकास सिंघवी एवं श्री मंजीत कोठारी जैन, भोजन निर्माण में श्री सुनील विश्लोत जैन एवं परिवहन सहित विभिन्न उप-समितियों और स्थानीय सहयोगी संस्थाओं ने भी व्यवस्थाओं को सुचारु बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अनेक संघों-संस्थाओं का सहयोग : भोजन काउंटर व्यवस्था में श्री गुरु पुष्कर युवा मंच, श्री गुरु पुष्कर भवन-वेसू, श्री महावीर पुष्कर जैन युवा मंच-भटार, श्री वर्धमान नवयुवक मंडल-उधना, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-गोडादरा सहित चलथान, पांडेसरा, टीकमनगर, वेसू मेवाड़, शांति भवन, अक्षर टाउनशिप एवं सूरत के विभिन्न उपसंघों का सहयोग प्राप्त हुआ। आयोजन समिति में अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय श्रावक समिति, नई दिल्ली का भी विशेष सहयोग रहा।

'श्री उपासकदशांग सूत्रम' का विमोचन : समारोह के दौरान 'श्री उपासकदशांग सूत्रम' का विमोचन भी किया गया। धार्मिक साहित्य के प्रकाशन एवं विमोचन ने समारोह के आध्यात्मिक एवं ज्ञानात्मक पक्ष को और समृद्ध किया। कार्यक्रम का संचालन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन ने किया। इस प्रकार शिवाचार्य का 85वाँ प्रकाशोत्सव केवल अभिनन्दन का अवसर न रहकर आत्म-साधना, गुरु-भक्ति, संघीय एकता, संगठन, सेवा, राष्ट्रीय सम्मान और सामाजिक उत्तरदायित्व का विराट संगम बन गया। देशभर से आए पदाधिकारियों एवं श्रद्धालुओं की उपस्थिति ने जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय संगठनात्मक शक्ति को अभिव्यक्त किया, वहीं पूज्य आचार्यश्री का "संसार के सभी कार्य करते हुए आत्मा को केन्द्र-बिन्दु में रखने" का संदेश इस ऐतिहासिक आयोजन की प्रमुख आध्यात्मिक उपलब्धि बनकर सामने आया। - जैन प्रकाश सम्पादकीय टीम



प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा

भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की

स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 22-09-2026
Date of Posting : 28/29-09-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 28 ✲ पृष्ठ : 8
माह : सितम्बर ✲ सप्ताह : 22 सितम्बर से 28 सितम्बर

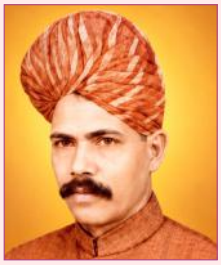
मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के ऐतिहासिक व्यक्तित्व श्रृंखला....

सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया जैन : भीनासर के नगरसेठ से स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के संगठन-शिल्पी तक

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन



स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं जिन्होंने अपनी संपन्नता को केवल व्यापार और परिवार तक सीमित न रखकर धर्म, शिक्षा, साधु-संघ और समाज-संगठन की स्थायी संस्थाओं में रूपांतरित किया। भीनासर (बीकानेर) के सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया जैन उन्हीं विरल व्यक्तित्वों में थे। पुराने जैन साहित्य में उन्हें "उत्साही, विचारवान कार्यकर्ता व दानवीर श्रीमन्त", जवाहर विद्यापीठ एवं जवाहर साहित्य प्रकाशन के प्रेरक तथा समाजसेवी के रूप में स्मरण किया गया है।

भीनासर में जन्मे चम्पालालजी को व्यापारिक प्रतिभा और समाजसेवा के संस्कार पिता सेठ हमीरमलजी बांठिया से तथा धार्मिक संस्कार माता श्रीमती जवाहरबाई से प्राप्त हुए। परिश्रम, संगठन-कौशल और उदारता के बल पर उन्होंने व्यापार में प्रतिष्ठा अर्जित की और भीनासर के नगरसेठ के रूप में विशिष्ट स्थान बनाया। बीकानेर दरबार में भी उनका विशेष प्रभाव और सम्मान था। महाराजा सर गंगासिंह बहादुर के काल में उन्हें राजकीय प्रतिष्ठा प्राप्त थी-नगरसेठ की पदवी तथा पैरों में सोना धारण करने संबंधी विशिष्ट सम्मान की परंपरागत स्मृतियाँ आज भी बांठिया परिवार और स्थानीय इतिहास में जीवित हैं।

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस और श्रमण-संघ की एकता के सेनानी : सेठ चम्पालालजी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस और श्रमण-संघ के संगठनात्मक इतिहास से जुड़ा है। सन् 1952 में उन्हें स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के सादड़ी अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया और यह अधिवेशन ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। इसके बाद उन्होंने भीनासर में विशाल साधु-सम्मेलन के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सादड़ी से प्रारम्भ हुई संगठन-चेतना का विस्तार भीनासर तक हुआ। स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास के अनुसार भीनासर सम्मेलन में 136 संत और 142 साध्वियाँ एकत्रित हुई। संतों के आवास की व्यवस्था चम्पालालजी बांठिया के बाग, कन्याशाला तथा अन्य स्थानों पर की गई थी। सम्मेलन के बाद विभिन्न उपसम्प्रदायों के साधु-साध्वियों में सौहार्द, विनय, स्नेह, सेवाभाव और सहयोग की भावना बढ़ने को इसकी प्रमुख उपलब्धियों में गिना गया है।

इस दृष्टि से चम्पालालजी केवल आयोजनकर्ता नहीं थे, वे उस युग की संगठनात्मक चेतना के सक्रिय संवाहक थे, जब स्थानकवासी समाज में व्यापक एकता का नया अध्याय लिखा जा रहा था।

गुरुभक्ति का अमर स्मारक "जवाहर विद्यापीठ" : आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज के साथ चम्पालालजी का संबंध उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक धारा था। आचार्यश्री के महाप्रयाण के समय अंतिम संस्कार की संपूर्ण व्यवस्था की बागडोर चम्पालालजी के हाथों में थी। उसी स्मृति को स्थायी रूप देने के लिए उन्होंने समाज के समक्ष स्मारक की कल्पना रखी और आगे चलकर 26 अप्रैल 1944 को श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर की स्थापना हुई। उन्होंने अपनी संपत्ति और संसाधनों को संस्था के निर्माण में लगाया। विद्यापीठ का उद्देश्य केवल शिक्षा देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और पारिवारिक संस्कार विकसित करना था। पुस्तकालय, वाचनालय तथा धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था इसी व्यापक दृष्टि का परिणाम थी। आचार्यश्री के व्याख्यानों पर आधारित 'जवाहर किरणावली' के 35 भागों के प्रकाशन में भी चम्पालालजी की प्रेरक भूमिका रही।

भीनासर की वह भूमि, जहाँ आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज का अंतिम संस्कार हुआ था, आगे चलकर गुरु स्मृति और ज्ञान-साधना का केंद्र बन गई-यह चम्पालालजी की गुरुभक्ति को जीवंत संस्थागत विरासत में बदल देने का अद्वितीय उदाहरण है।

शिक्षा, सेवा और समाज-निर्माण : सेठजी का सेवाक्षेत्र केवल विद्यापीठ तक सीमित नहीं था। भीनासर में उनकी कन्या पाठशाला का उल्लेख पुराने बीकानेर जैन लेख संग्रह में मिलता है। उन्होंने पौषधशाला और धार्मिक ट्रस्ट जैसी संस्थाओं को भी समाजहित में समर्पित किया। उनकी दृष्टि में धन की सार्थकता उसके सदुपयोग में थी। इसी कारण उन्हें केवल धनाढ्य सेठ नहीं, बल्कि दानवीर और समाज-निर्माता के रूप में स्मरण किया गया।

श्रीमती तारादेवी बांठिया - महिला संगठन की सशक्त आवाज : सेठ चम्पालालजी की सामाजिक साधना को उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी बांठिया ने महिला-जागरण और संगठन के क्षेत्र में आगे बढ़ाया। वे अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों में गई और प्रांतीय महिला शाखाओं को संगठित एवं प्रेरित किया। शिक्षा और महिला स्वावलम्बन के कार्यों में भी उनकी विशेष रुचि रही। जवाहर विद्यापीठ की महिला उद्योगशाला में सिलाई, कढ़ाई, चित्रकला एवं अन्य प्रशिक्षण गतिविधियों को गतिशील बनाए रखने में उनकी विशेष रुचि का उल्लेख स्मारिका में मिलता है।

तारादेवीजी का व्यक्तित्व चम्पालालजी की सेवा-परंपरा का महिला-स्वर था-उन्होंने महिला संगठन को घर की सीमा से निकालकर राष्ट्रीय सामाजिक मंच तक पहुँचाया और धर्म, शिक्षा तथा स्वावलम्बन को महिला-जागरण से जोड़ा।

सेठ चम्पालालजी बांठिया का जीवन वस्तुतः धन से धर्म, संपत्ति से संस्था और नेतृत्व से संगठन की यात्रा है। भीनासर के विराट साधु-सम्मेलन से लेकर सादड़ी साधु सम्मेलन एवं स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस अधिवेशन की अध्यक्षता तक, जवाहर विद्यापीठ की स्थापना तक और शिक्षा-साहित्य से लेकर समाजसेवा तक, उन्होंने अपने समय को केवल जिया नहीं, बल्कि उस पर स्थायी सामाजिक हस्ताक्षर किए। आज उनकी सबसे बड़ी पहचान उनकी हवेली या नगरसेठ की प्रतिष्ठा नहीं, बल्कि जवाहर विद्यापीठ, जवाहर साहित्य-परंपरा, साधु-संघ सेवा और स्थानकवासी समाज की एकता के लिए किए गए उनके कार्य हैं।

सेठ चम्पालालजी बांठिया जैन एक व्यक्ति नहीं, स्थानकवासी समाज के उस स्वर्णिम युग की पहचान थे, जब संपन्नता सेवा बनती थी, नेतृत्व संगठन बनता था और गुरुभक्ति एक जीवित संस्था का रूप लेती थी।

(शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत में संग्रहित दुर्लभ दस्तावेजों के आधार पर)

जैन गौरव

दीवान टोडरमल जैन

गुरु गोविन्द सिंह जी के दो पुत्र अजीत सिंह व जुझार सिंह का चमकोर युद्ध में बलिदान हो गया। जिनकी आयु 18 और 16 वर्ष की थी। दो पुत्र फतेहसिंह व जोरावर सिंह जिनकी आयु 8 व 6 वर्ष थी। सरसा नदी पार करते हुये माता गुजरी गुरु गोविन्द सिंह जी की माता जी अपने दो पोतों के साथ गुरु गोविन्द सिंह जी से बिछड़ गये थे। बीस वर्षों से सेवा करने वाला रसोईये का कार्य करने वाले गंगू के घर रहना पड़ा। माता गुजरी के पास गहने और सोने के सिक्के थे। गंगू का मन लालच से भर आया। उसने वह सब कुछ चुराने और पाने की सोची। फिर उसे मुगलों द्वारा पकड़वा कर शाही ईनाम भी प्राप्त करना था। गंगू मोरिण्डा नगर गया और उसने शहर कोतवाल को सब कह सुनाया। सरहिंद के नवाब वजीरखान ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। जेल में माता गुजरी ने अपने दोनों पोतों को ज्ञान की बातें बताई। आने वाली विपदा के सामने धर्म की लड़ाई कैसे लड़नी है इसकी शिक्षा दी।

सुबह नवाब ने दोनों साहिबजादों को पेश होने का आदेश दिया। काजी मोअल्लम की मौजूदगी थी। शरिया, कानून का पालन होना था। उन्होंने अन्दर जाने के लिये एक छोटा सा दरवाजा बनाया था। ताकि आने जाने वाला झुककर अन्दर आये। परन्तु दोनों धर्मवीरों ने पहले पाँव दरवाजे से पार किये। फिर शीश उठाकर दरबार में प्रवेश करते हुए उद्घोष करने लगे-वाहिगुरु जी का खालसा। वाहिगुरु जी की फतेह....।

नवाब वजीर खान ने कहा ओ छोटे बच्चों! तुम्हारे बड़े भाई पिता के साथ शहीद हो गये हैं। सौभाग्य से तुम मेरे दरबार में जिंदा आ पाये हो। जल्दी करों और इस्लाम कबूल कर लो। मुस्लिम बच्चों के रूप में तुम्हारा जीवन राजकुमारों सा होगा।

वीर गुरुपुत्रों ने स्पष्ट इंकार ही नहीं किया, बल्कि नवाब की खिल्ली भी उड़ाई। उन्होंने कहा, सिक्खी हमें जान से भी प्यारी है। यह मायाबी दुनिया हमें धर्म परिवर्तन के लिये मजबूर नहीं कर सकती। हम गुरु गोविन्द सिंह जैसे शेर के पुत्र हैं। 6 और 8 वर्ष के बालकों के ऐसे उत्तर सुनकर नवाब दंग रह गया। तीन दिनों की जद्दोजहद के बाद काजी ने शरिया कानून की रोशनी में दोनों बच्चों को दीवार में जिंदा चिनवा देने का हुक्म जारी किया। सरहिंद के नवाब खान के दरबार में नवाब मलेर कोटला शेरखान ने छोटे निरीह बालकों को इस प्रकार की सजा देने का विरोध किया था। गुरु पुत्रों को 27 दिसम्बर 1704 को दीवार में चुनवाया गया। दीवान टोडरमल ने गुरुपुत्रों के दाह संस्कार की इच्छा व्यक्त की, परन्तु दाह संस्कार के लिये हकूमत ने जगह नहीं दी। टोडरमल प्रभावी व्यक्ति थे। आग्रह करने पर अनुमति मिली परन्तु शर्त यह रखी गई कि जितने स्थान पर स्वर्ण मुद्रायें बिछा दी जायेगी उतनी भूमि दाह-संस्कार के लिये मिल सकेगी। दीवान साहब ने अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर स्वर्ण मुद्रायें इकट्ठी की। 6x6 फीट की भूमि हेतु सिक्के खड़े कर नवाब की शर्त पूरी की 80 हजार स्वर्ण मुद्रायें देकर दुनिया की सबसे महंगी भूमि खरीद कर दाह संस्कार किया। उसी स्थान पर ज्योति स्वरूप गुरुद्वारा कायम किया गया। वहाँ बने सभाग्रह का नाम दीवान श्री के नाम पर रखा गया है। कैसा धर्म समन्वय था, कैसा धर्म पर विश्वास था धर्म पर बलिदान होने वालों का कैसा सम्मान था। धन्य है दीवान टोडरमल जैन श्रावक।

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain



R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES POLUR
vannalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR ERUVANAMALAI VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606 803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR



M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906